[illegible]॥

श्रीमङ्गलदेवानमपूजा



ॐ नम४श्री त्रिपुरायै ॥ गुरुनमस्कार ॥ ऐं क्लीं सौ त्रिपुरसुन्दरी अमृत
लुवायनम ॥ ऐं क्लीं सौं आधारपूजा स्थायनम ॥ धनदेवासन ॥ ऐं क्लीं
सौं आत्मास्थायनम ॥ न्यास ॥ ऐं क्लीं सौं हृदयायनम ॥ इत्यादि अंग
गन, करन्यास न्यास ॥ वाग्भव, आधार ॥ कामराज, हृदय ॥ न
किबीज कुम्भस्थ ॥ सुन्दरी ब्रह्मरन्ध्र ॥ ऊलयाथपूजा ॥ ध्यानः
पि, ॥ ऐं क्लीं सौं त्रिपुरादेवी विद्महे क्लीं कामिनि धीमहि, सौं त

न्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥ आत्मादि सर्वदेवता आवाहनं ॥ अर्घपात्रस्था
पनम ॥ ऐं क्लीं सौं सः स४ आनन्दभैरवाय वौषट् ॥ वतन्न ॥ आ
हनादि ॥ गिरक्षामू[illegible] ॥ तत्वशुद्धि ॥ ऐं चन्दन ॥ क्लीं अक्षत ॥ सौः
विलस्म ॥ ऐं क्लीं सौं पुष्पं नम ॥ ऐं क्लीं सौं अंजाय रूदं ॥ अर्घपात्र
दकनलिन सिवया ॥ ऐं क्लीं सौं महापद्मवनान्तस्थे, कारणा[illegible]दवि
ग्रहे ॥ सर्वभूतहितेमातः एह्येहि परमेश्वरी ॥ आवाहन ॥ दिव्य ॥

आसन ॥ पूजन ॥ वलि ॥ मुद्रा ॥ आसन ॥ आधानलक्ष्म्यादि ८ ॥ श्री

चक्र ॥ सुन्दरी ॥ त्रिपुरभैरवी, सनातन, पूजनयाय ॥ ध्यान ॥ ना

नार्क्कमनुलासा, त्रिनयनाश्च चतुर्भुजा । पासाङ्कुसगनवाय

शिवाम्बालयकुं सदा ॥ गायत्री ॥ ऐँ ह्रीँ गगनयतिनाथवल्लभाम्बा

पादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ वँ वटुकनाथवल्लभाम्बापादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ क्षौं क्षे

त्रपालनाथवल्लभाम्बापादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ ह्रीं कामदेवानन्दवा

पादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ ब्लूँ वगलश्रीअंबापादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ दंदञ्याययादु

कां ॥ ऐँ ह्रीँ पवनमशिवनश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ पवन्याम्बागकिश्रीपादु

कां ॥ ऐँ ह्रीँ कुलस्वनानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ शुकादेवीश्रीपा

दुकां ॥ ऐँ ह्रीँ कौलस्वनानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ वामकस्वनीश्री

पादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ शागानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ ह्रीं लिंगानन्द

नाथश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ सिंहानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ऐँ ह्रीँ श्रीम

न्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं सद्ज्ञानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं विश्व
नन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं विमलानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं
मउनानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं गगनानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ
ह्रीं वन्दानन्दनाथश्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं प्रकाशविमर्शश्रीपादुकां ॥ ॐ
ह्रीं वटुकनरवाथेपादुकां ॥ थ्वतेनं वलि ॥ हं सास्नायनम ॥ इखास्ना
यनम ४ ॥ मयूनास्नायनम ४ ॥ गनूतस्नायनम ४ ॥ महिखास्नायन

म ४ ॥ गजास्नायनम ४ ॥ थनास्नायनम ४ ॥ ननास्नायनम ४ ॥ ॐ ह्रीं ऊ
र्ध्ववक्त्रायनीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं माहेश्वनीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं उड्ड
कीमानीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं मस वैष्णवीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं ऐं वानाहीनी
पादुकां ॥ ॐ ह्रीं ऐं नन्द्रायनीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं ओं चामुण्डायादु
कां ॥ ॐ ह्रीं कुंकुमहालक्ष्मीपादुकां ॥ थ्वतेनं वलि ॥ ऐं ह्रीं सौं त्रिपुरादे
वीश्रीपादुकां ॥ मूलमन्त्र ॥ ऐं ह्रीं सौं ह्स्क्ल ह्रीं, ह्स्क्ल ह्रीं ह्स्क्ल त्रिपुरसुन्दरी

श्रीपादुकां ॥ ॐ त्रिचक्रपूजा ॥ [illegible] कामरूपायपूजा ॥ मातङ्गचक्रनी ॥
ॐ मातङ्गनीस्य स्वामिनी पादुकं नम ॥ ॐ ह्रीं सौं नवचक्रेश्वरी श्री
पादुकां ॥ वसुसमय स्वामिनी श्रीपादुकां ॥ ख्फ्रूं महाचण्डयोग स्वामिनी पू
ज्यापादुकां ॥ उड्डियानसमया श्रीपादुकां ॥ धनमलयापपूजा ॥ सू
न्दनी पूजन ॥ त्रिकूटपद्मासनाय नम ४ ॥ ध्यान ॥ बालार्कमण्डला
सात्यादि ॥ ॐ ह्रीं सौं [illegible] भूमिचक्र काम गीर्व्यालय श्रीमित्र

सनाथ अम्बिका श्रीकाम स्वामिनी देवी मुद्रा लम्भनकि श्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं
सौं ख्फ्रीं सूर्यचक्र जालन्धर पीठ [illegible] सनाथ अम्बिका चक्र स्वामिनी दे
वी [illegible] विश्वात्मनकि श्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं सौं ख्फ्रीं सोमचक्र पूर्णगि
रि गह्वर [illegible] सनाथ अम्बिका [illegible] मालनी दे [illegible] वी [illegible] नकि
श्रीपादुकां ॥ ॐ ह्रीं सौं [illegible] ब्रह्मचक्र उड्डियानपी
ठ [illegible] नाथ अम्बिका श्रीम [illegible] पियूषसुन्दनी देवी [illegible]

गक्रिया पादुका ॥ थपनं वलि ॥ वलिमन्त्र ॥ ॐ ह्रीं स्रौं वटुकनाथाय
तथा युग्म वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं स्रौं यां सर्व्वयोगिनि भ्यो तथा युग्म
वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं स्रौं अमुद्वीप अमुकदेवी अमुक क्षेत्रपा
लाय तथा युग्म वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं स्रौं ग्लौं गणपतिनाथाय
तथा युग्म वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ त्वाकमहावलि नधूनक ॥ आवाहन
मुद्रा ॥ थानि ॥ तिरखण्ड ॥ ॐ ह्रीं स्रौं अमृताय स्वाहा ॥ बिन्दु पश्य ॥ धूप

दीप ॥ नैवेद्य ॥ काय ॥ ॐ ह्रीं स्रौं स्वाहा १०८ ॥ स्तोत्र ॥ लघुस्तव ॥ अन्त
गन्धादि ॥ तर्प्पन ॥ एकानेक ॥ दक्षआशीर्व्वादि ॥ अम्बपूर्व्व ॥ आल
आशीर्व्वाद ॥ वलि विसर्ज्जन ॥ वलिह्लाय ॥ सूर्य्यार्घ ॥ द्वान पूजा ॥ द
ण्डीनमस्कार ॥ ॐ श्रीश्रीत्रिपुरसुन्दरीदव्यायनिय स्वर्ग्पेदवाद्यैः
न विधि समाप्त ॥ विजिन खोड्ठया याकनु निसंहृलि ॥ ॥
ॐ नमः श्रीजड्डिकायै ॥ ॐ याइक श्यामन ॥ अरखण्ड मण्डलाकं

नौ ध्यायेत्यनवनावनं गल्यदंड लिंगयन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥४॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवमहेश्वर ॥४॥ गुरुरेव जगत्सर्वं शिवात्मकं तस्मै
श्रीगुरुवे नमः ॥४॥ पनम छियनम गुरुन्यनमा वाञ्छश्रीश्री आदिब
द्धश्रीश्री पादुकां पूजयामि ॥ पद्मासनाय नम ॥ कूर्मासनाय नम ॥ न्यास
किलि२ विश्वकाल्किनाथे अंगुष्ठाय विन्दुनाथपादुकां ॥४॥ कनसाव
नं ॥ ॐ ऐं रुगवतिघानरक्तकमलाये कनिष्ठकाय पादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रौं

श्रीउड्डिकाये कनिष्ठकाय पादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रां ह्रीं श्रीवर्द्धनाशिखम
ध्यमाय पादुकां ॥ ॐ ऐं ड ऊलनयअंघा नामूर्द्धिनरूद्धन्याय पादुकां
॥ ॐ ऐं ह्रूं ह्रौं श्रीमकोदेनिकाये अंगुष्ठाय पादुकां ॥ ॐ ऐं किलिरवि
श्वकाल्किनाथे अंगुष्ठाय रुद्र ॥ करन्यास ॥ ॐ ऐं रुगवतिघानयना
येयनमकलाय उर्द्धवकाय श्रीनित्यानन्दनाथपादुकां ॥ ह्रौं श्री
उड्डिकगगमालिनीशिवाये ऊलदीपाये नित्यसत्यामना ... थ

पादुकां ॥ ॐ स्ह्रूँ स्ह्रीँ स्ह्रूँ सिद्धियोगेश्वरीमुद्राये पूर्ववक्त्राय निलस
खननाथपादुकां ॥ ॐ ऐं ५ ञनमभजुघा नामूर्खी श्री कालिविद्याये
दक्षिणवक्त्राय श्रीमहारुनवनाथपादुकां ॥ ह्रौं ह्रूँ श्रीमहालक्ष्मी
मन्त्राये उत्तरवक्त्राये श्री आदिनाथपादुकां ॥ किनिरविच्चकाक्ष
नाये श्री स्वच्छन्दउमारुगवनियश्चिमवक्त्राय श्री ध्यायकनाथपादु
कां ॥ वक्त्रन्यास ॥ ॐ रुगवतिघान्द्र कमलाये हृदयाये विद्यानन्द
नाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्री उड्डिक कुलदीपाये शिनस्थामना
थपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ ह्रूँ ॐ ह्रूँ वर्द्धन शिखशिखायां श्री उर्द्ध यनाथपा
दुकां ॥ ॐ ऐं ५ ञनमभजु घानामूर्खी वक्त्रनूपाये कवचाय श्री
विमलानन्दनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रौं ह्रौं महाचा निकाये नेत्रत्रयाय
श्री जून्मानन्दनाथपादुकां ॥ ॐ किनिरविच्चकाक्षनाये अस्त्राय
विन्दुनाथपादुकां ॥ अङ्गन्यास ॥ जलपात्रस्नायपादुकां ॥

श्रीकुलयाए हृद्दा विकाययपादुकां ॥ अतं गनसं पूजा ॥ आवाहं

॥ मूद्रा ॥ ध्यान ॥ श्रीज्ञानाथाय विघ्नहुश्रीहेवाय ॥ श्रीमह

तन्नाकालिप्रपादयात् ॥ गनमंचनआसादि ॥ सर्व्वद्रव्यथा कर्न

॥ अर्घपात्रासनायनम ॥ अधानासु ॥ १३२१ ॥ अतक्रं ॥ आवाहं ॥ मू

द्रा ॥ ध्यानि ॥ शुनहुस्थि ॥ हूँक्रींह्रौं श्रूँ क्लीं ॥ लामविलामन ॥ १३२१ ॥

आत्मन, चन्दननम ॥ सर्व्वकुलमा हनीनम ॥ पुष्पनम ॥ विन्दून

य ॥ ह्रूँ ॥ यासायनायनादेवी, खचनी खखनूपिनी ॥ शुनलोकग

नादेवी, आयानकं हमनुल ॥ आवाहन ॥ ऊँफूनकमनुलश्रीः

आदिदेवी पादुकां ॥ मूसास्नायनम ॥ मयूनास्नायनम ॥ नेना

स्नायनम ॥ गाँ गीं गूं गैं ॥ ८ ॥ ग्लौं श्रीकुलगणेश्वनायपादुकां ॥ गधी

ऊँ श्रीकुलपूतवटुकनाथपादुकां ॥ श्रीकुलगद्दीयचण्डदेवीमहाउ

यक्षपयालायपादुकां ॥ ध्वनेनविति ॥ आवाहं ॥ गजा ॥ दनु ॥ नर्क

नीमूजा ॥ सिंहासनाय नमः ॥ ॐ आँ योगिनी आवलि ... स्वाहा ॥ मू
लमूजन ॥ अस्त्र ॥ ॐ ह्रीं विमलासनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं उदयासनाय नमः
ॐ ह्रूँ उदयासनाय नमः ३ ॥ ॐ ह्रूँ कमलासनाय नमः ४ ॥ ॐ ह्रौं सिंहासना
य नमः ४ ॥ ॐ श्रीकण्ठदेवला ... देवी अमृतखण्डमलापि ... श्रीनाथगुरु
श्रीकौलिकाम्ब ऐं ह्रीं श्रीं खगगुरुनाथ ह्सौं श्रीकदम्बाम्बावलि अम्बा
पादुकां ॥ ॐ ... कनदेवलादेवी श्री ... अमनमगुलामिकाम्ब

श्रीनाथगुरुकुलाम्ब ऐं ह्रीं श्रीं कच्छगुरुनाथ ह्सौं श्रीविमलाम्बावलि अ
म्बापादुकां ॥ ॐ अनन्तदेवनादेवी श्री ... अनन्तमगुलामि
काम्ब श्रीनाथगुरु श्रीकौलिकाम्ब ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञगुरुनाथ ह्सौं श्रीअ
भावावलि अम्बापादुकां ॥ ॐ सदाशिव श्री अमा ... य ... मगु
लाविकाम्ब श्रीनाथगुरु अनामाम्ब ऐं ह्रीं श्रीं समयगुरुनाथ ह्सौं श्री
सयाम्बावलि अम्बापादुकां ॥ ॐ ... पि ... लदेव हो श्री अ ... ल

मकुलाभिकानंदनाथश्रूवृविमनास्त्रौंश्रीउड्डकुकनाथश्रीं श्री
हौंसवास्त्रवलिअम्बापादुका ॥ गुरुपंक्ते ॥ ॐ ऐं म्लौं श्रीचिञ्चि खें नी
सनाथश्रीहौंसवास्त्रनाथपादुका ॥ मध्ये ॥ गमय म्रि ॥ अस्त्रनाथ
यविमद हौंसवा श्रीमह नन्दीलिप्यद्यादय नू ॥ मध्ये ॥ ॐ ऐं ह
गवनिकालिहौंसकालिश्रीकुलकालिअम्बापादुका ॥ मध्ये ॥ ॐ ऐं सहं
निकलहौंसवाययपादुका ॥ ॐ ऐं हहौंसकलहौंसवाययपादुका ॥ ॐ ऐं कं

ॐ बकूनूपहौंसवाययपादुका ॥ महं अघोनीसहौंसवाययपादुका ॥
लहं व्याभिहौंसनेहेक्रंयपादुका ॥ वहं वनुगहौंसवाययपादुका ॥
नहौं विस्त्रनहौंसवाययपादुका ॥ यहं कुम्भूनूहौंसवाययपादुका ॥ ॐ हं
४ अमृतासहौंसवाययपादुका ॥ ॐ ऐं गकिहौंसवानन्दहौंसवानन्दवीना
थिकयं ॥ निवास्त्रनाथनवास्मानन्दअवअम्बापादुका
॥ गश्रीचि श्चिहौंनाथपादुका ॥ ऐं हौं श्रीआनन्दनाथपादुका ॥ ऐं हिं

श्रीकदम्बनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रौं श्रीविमलानन्दनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्री
कुसुमनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्रीगन्धकनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रैं श्रीसमः
यनाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्रीविलासखवननाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्रीकल्मय
नाथपादुकां ॥ ॐ ह्रूँ श्रीकुमाननाथपादुकां ॥ ह्रूँ श्रीमनूतननाथपाद
कां ॥ ह्रैं श्री[illegible]वनाथपादुकां ॥ ह्रौं श्रीरववनाथपादुकां ॥ ह्रौं श्रीकि
ननाथपादुकां ॥ ह्रूँ श्रीचक्रनाथपादुकां ॥ ह्र ४ श्रीमर्दननाथपादुकां ॥
ल

मातसिद्धा ॥ ७८ ॥ ध्यान ॥ ॐ मूलचक्रं महापीठं स्वर्णपद्मासमप्रभं ।
दशाकुटमध्ये [illegible]काय श्रीमीनादिकृतानन ४ ॥ विद्याद्धलिंगसंस्था कथ्यामृ
तसम्भानिनी । कथ्य[illegible]मूखयानपात्रं मर्थयन्तस्मिनाथनं ॥ कुसिनामन
यासरूढ विरतिमनूमार्गेन । कांगुहृद्वाक्रमालाव कांयरूजुलिपू
जितं ॥ महापलयसूर्ययरूढ नाजानदक्षिणेकन । रूतार्क वेवमखाङ्ग
मंकूर्णयत्रिसंधनू ॥ पूस्कर्वं नागयासरूढ सागरं पृथिवीसरु । कर्कि

सकलसामंच वामयाद्यविनाशनं ॥ सर्व्वकूलुलललचकं नागउज्ञाप्रवि
तीनं । नूलुमालागलवद्धा, ज्ञावत्यादावनं । विनीछ्वतयभासनस्कं उ
मद्विनांनन्दनन्दिता । एवं ध्यात्वा विमिवत्स्तुत्वा विधिपूर्व्वकं ॥ अर्घ
वक्कंउदकस्य, वर्ण्णकमकगुसारितं । श्रीगानंरूढिकारासं, गदद्वर्द्ध
मूर्खास्मृता ४॥ दक्षिणंयम्भवर्क्कंउ, मध्यनीलात्पलयुरं । पीतमूलनव
कृत्कु, विकिद्धवितमिश्वानं ॥ तदमस्तुवउवर्क्कं, पूर्ववालसीनिरं ।

दक्षिणंकमूवर्क्कंउ, यद्यिमंत्वितयभवत् ॥ नकमूलनवक्कंउ, वउ
विसमिलादनं । उयहुयनिवक्तानां, कल्याकोंसमिश्वानं ॥ ध्वस ॥
नवाभासंगगताध्वी, एकवक्का त्रिलात्रनी । मनाद्दनतलाकाना स्या
मायायेनिकलनि ॥ सर्व्वविघ्नायसमनि ज्ञावनामतलालसा । स्वच्छान्
यधनिद्ददी, नानामनास्तुसानन ॥ ध्वीस ॥ प्रियंजलि । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं
गंगवतिघान, [illegible] [illegible] कल्कि कस्त्रां मूं मूं दउत्तनमदो ॐ

नामखी क्रूं क्रूं क्रिं [illegible] विन्दु क्रों क्ष्म्रूं ग्रौं क्रीं ठं वालास्यायऋम्बा पादुकं
पूजयामि ॥ शिक्षा ॥ यनिवल्ह पू जनं ॥ वस्त्राद्यादि ८ ॥ ओसिताक्षि
दि ८ ॥ उपवस्त्र पूजनं ॥ सूत्रवस्त्रादि ८ ॥ क्ष्म्रूं ग्रीं सिद्धि चामुण्डेश्वरी
वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ स्व स्व मन्त्रेन वलि ॥ व [illegible] लिमन्त्र ॥ क्रीं ग्रीं वटुक
नाथस्व वलं रासहितायवलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ क्षौं क्षेत्रपाल नाथस्व व
लं रासहितवलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ यों सर्वयोगिनीभ्यो वलिं गृह्न २ स्वाहा ॥

ॐ क्लीं कनवीजसमसानाधिपतयवलिं गृह्न २ स्वाहा ॥ लोकमहावलिन पूजन
के ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ क्ष्म्रूं स्वाहा ३ ४ ॥ तात्र तर्प्पन ॥ ॐ शिगुरुमण्डल
पूजा ॥ ॥ गतो कर्म्मेन वार्चनं ॥ न्यासादि ॥ आत्मपूजा ॥ आवाहनादि
षिदव ॥ ॐ क्लीं विमलासनाय नमः ॥ ॐ इत्यादि पञ्चआसनं ॥ ऐं कुल कामातीद्
सरकुलेवाल्गेश्वरी महाकर्म्मादयविद्या यी पादुकां ॥ मूलविद्या ॥ ३ ३ ३ ॥
हाँ हीं हूं हैं हौं हः ४ कुलेश्वरी पादुकां ॥ सौं ७ सिद्धेश्वरी पादुकां ॥ यैं ६ नन्द

खनीपादुकां ॥ कौ ३ विश्व[illegible]नाथपादुकां ॥ चतुष्कोणपूजा ॥ नमो भद्रका
ल्पूजनं ॥ ॐ कामरूपपीठपादुकां ॥ ॐ पूर्णगिरीपीठाय ३ ॥
ॐ जालंधरपीठाय ३ ॥ ॐ ओड्डियानपीठाय ३ ॥ वायुकोण ॥ ॐ अ
नादिविमल श्रीपादुकां ॥ ॐ सर्व्वज्ञविमल श्री ३ ॥ ॐ योगविमल श्री ३ ॥
ॐ सिद्धिविमल श्री ३ ॥ ॐ समयविमल श्री ३ ॥ [illegible]नकोण ॥ ॐ डाकि
नीपादुकां ॥ ॐ रां राकिनी ३ ॥ ॐ लां लाकिनी ३ ॥ ॐ कां काकिनी ३ ॥ ॐ
सां साकिनी ३ ॥ ॐ हां हाकिनी ३ ॥ ईशानकोण ॥ ॐ मित्रनाथपा
दुकां ३ ॥ ॐ षष्ठनाथ ३ ॥ ॐ चन्द्रनाथ ३ ॥ ॐ ओडिसनाथ ३ ॥ अग्निको
ण ॥ ॐ ह्लूं गगनलोकपादुकां ३ ॥ ॐ स्लूं स्वर्गलोक ३ ॥ ॐ ह्लूं पवनलो
काय ३ ॥ ॐ म्लूं मर्त्यलोकाय ३ ॥ ॐ न्लूं नागलोक ३ ॥ [illegible]नकोण
॥ ॐ यनाद्यश्री पादुकां ॥ ॐ अनुपनाद्यश्री ३ ॥ ॐ यनायनद्ये ३ ॥ ॐ आत्मनन्द
[illegible] पादुकां ॥ नैऋत्यकोण ॥ इति पूजा विनतिकर्म ॥ नमो

मूलदलपूजनं॥ ० श्रयाग्नेकोण ब्रह्मायनीजुसिनांगहेनवसहितायं
कुर्कां॥ ० वनूनकोण माहेश्वरी चूचूरेनवसहित३॥ ० कोलायूलकं
तकोमानीचलुरेनवसहित३॥ ० अट्टहास कोण वैष्णवीकाटरुनवः
सहित३॥ ० उयकि धूनकोण वालाहिडम्मकरेनवसहित३॥ ० च
निगुक्कोण त्र्वायनीकयालिसलेनवसहित३॥ ० ऐकाम्रककोणचा
मुन्डां शीषनरेनवसहित३॥ ० देवीकोटकोण महालक्ष्मी संहानरे

नवसहित३॥ गणाधिनपूजा॥ ॐ ह्रीं श्रीं यानालवानकनीक्कमल
उत्वनमलु लखवनीउवनीलां निवस्थंतु॥ उत्तर॥ ॐ ह्रीं श्रीं यक्कस
उतानाक्क जोग्यास्तुयाइकां॥ पश्चिम॥ ॐ ह्रीं श्रीं वटुकनाथ यथीम
लिनुरेनवाय३॥ पूर्व॥ मध्यमूलमन्त्रनसंपूजं॥ ० उ२० ॥ षडंग
नसंपूजं॥ शिखलु॥ सूत्री कूडकलु मालयरवलु शिखलु क्वेयाइकां
० कल कामानीवि [illegible] मद मतकाटिश्रीमद नम्नाकोलियवा

दयाहू ॥ वटुकादिक्रुउवलिदयाहू ॥ ननाउलनयपूजाने ॥ कुद्रवंत
कि ८ ॥ श्रूँ श्रीसिद्धिचामुण्डेश्वनीपाइकाँ ॥ नवान्द्रनी ॥ मातृमाक
नी ॥ त्रि धूपूजनगण्याकर्म्म ॥ वाकमलवलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप
श्लोत्र ॥ तर्प्पन ॥ नमः श्रीनाथाय ॥ नमः श्रीसिद्धिनाथाय ॥ नमः श्री
विश्विनीनाथायनमोनमः ॥ व[illegible]नक ॥ अश्वपूर्व्व ॥ वलिविसर्ज्जन ॥
वलि[illegible]य ॥ सूर्य्यार्घ्य ॥ ना[illegible]नपूजा ॥ द्वानपूजा ॥ थेथूद्वानपू

जा ॥ [illegible]वनमस्कान ॥ इति श्रीपूर्व्वाल्लनित्यक्वार्च्चनविधिसमा
प्त ॥ ५ ॥ चाक्कवाहानयाकेगु विसर्जूलि ॥ ७ ॥
१ ॐ नमः श्रीकुब्जिकायै ॥ गुरुनमस्कान ॥ न्यास ॥ ॐ कनिष्ठका
यनमः ॥ ह्रीँ अनाविकायस्वाहा ॥ ह्रौँ मध्यमायवषट् ॥ ह्रूँ गर्ज्जन्या
यहुँ ॥ ह्रौँ अङ्गुष्ठायवषट् ॥ अकलकायफट् ॥ कनिष्ठ[illegible]कादि
अङ्गुष्ठान्तं ॥ पुनरङ्गुष्ठादिक निष्ठकान्तं ॥ त्रैयग्मिमव[illegible]कायन

मः॥ ॐ उत्तरवक्त्राय नमः॥ ॐ दक्षिणवक्त्राय नमः॥ ॐ पूर्ववक्त्राय
नमः॥ ॐ ऊर्द्ध्ववक्त्राय नमः॥ ॐ ॐ अधोवक्त्राय नमः॥ वक्त्रन्या
सः॥ ॐ हृदयाय नमः॥ ॐ शिरसे स्वाहा॥ ॐ शिखायै वषट्॥ ॐ क
वचाय हुं॥ ॐ नेत्रत्रयाय वषट्॥ ॐ करतलकाय फट्॥ अंगन्यासः॥
ऊ लक्ष्यासपूजा॥ ॐ क्रीं ह्रीं क्रूं श्रीं सामान्यार्घपात्राय नमः॥ ह्लूं स्हूं
ह्लूं म्लूं न्लूं पञ्चामृतार्घ [illegible] पात्राय नमः॥ अथ अञ्जन पूर्वे ॐ॥ याति मू
स्वाहा।

द्रां॥ गुरुशुद्धि॥ ॐ आत्मासनाय नमः॥ ॐ आत्मनचन्दनं नमः॥ ॐ क्रीं
ह्रीं क्रूं श्रीं आत्मनपुष्पं नमः॥ विन्दुउ सिनसिंच॥ संवर्त्तनआवा
हनं॥ [illegible]॥ ॐ ३ मित्रीसानन्दनाथपायिपू॥ ॐ३ अतिसनाथपायिपू॥
ॐ३ अष्टिसनाथपायिपू॥ ॐ३ चर्द्धिसंनाथपायिपू॥ ॐ३ उद्दि संनाथपायिपू॥
ह्रौं नकमहाविद्यायै० नकपूर्ण नकमहामण्डलायै० नकचक्र नक
महामन्त्रायै० नकदीप नकमहामुद्रायै० नकमति नकप्रकासनि

मूँ नकुपादुकां ॥ दक्षिण ॥ ॐ ह्रूँ श्रीकुब्जमहाविद्यायौ० श्रीकुब्जपूज्य श्री
कुब्जमहामण्डलयौ० श्रीकुब्जचक्र श्रीकुब्जमहामन्त्रयौ० श्रीकुब्जदीप श्रीकुब्ज
महामूर्त्तयौ० श्रीकुब्जमति श्रीकुब्जप्रकाशानन्दनाथप्रज्ञा श्रीकुब्जपादुकां ॥
उत्तर ॥ ॐ अमृतानन्दनाथ अमृताम्बा पादुकां पू ॥ थ्व नं वलि ॥ आय
क्षौं स्वाहा १० ॥ ह्रौं स्वाहा १० ॥ पात्र ॥ ॐ गन्धादि ॥ तर्प्पन ॥ थ्वकोनक
अर्घ्य पूज ॥ इति पादुकापूजा ॥ ॥ लिंगगुरु मण्डल पूजनं ॥

ॐ ...नाथनम ॥ ॐ आत्मा स्वाय नम ॥ थ्वन अर्घ्य काया व ॥ न्यासयं
या ॥ ॐ ह्रूँ ४ कनिष्ठिकाङ्गुलीनायै ह्रूँ ४ अक्लभक्तजनेश्वराय रूटू ॥
४ ॥ ...न्यासं पूजनं ॥ ॐ ह्रूँ नमो भगवति शुद्ध कमलायै ह्रौं कनिष्ठका
य नम ॥ ॐ ह्रौं ह्रूँ कलि कायै कुलदीपायै ह्रूँ अनामिकायै स्वाहा ॥
क्रूँ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ... वद्धमायै ह्रूँ मध्यमायै वौ षट् ॥ ॐ ह्रूँ ... तर्ज्जनी
... अङ्गुष्ठाभ्यां ... तर्ज्जन्यायै ... ॥ ह्रौं ह्रौं

महन्तारिकायै ह्रौं ऊं शुद्धायै वषट् ॥ कनिष्ठकादि करन्यास ॥
ह्रां नमो भगवति ह्रीं कमलायै ह्रां पश्चिमवक्त्राय नम ॥ ॐ
ह्रीं ह्रीं कुब्जिकायै कलदीपायै उत्तरवक्त्राय नम ॥ ॐ ह्रूं
ङञण नमे अघोरामुखि छ्रां छ्रीं पायै ह्रूं पूर्ववक्त्राय नम ॥
ॐ ह्रैं ह्रैं महन्तारिकायै दक्षिणवक्त्राय नम ॥ ॐ ह्रौं किनि २ वि
च्चे कालिकायै ह्रः ऊर्द्ध्वमीशानवक्त्राय नम ॥ वक्त्रन्यास ॥

ॐ ह्रां नमो भगवति ह्रीं कमलायै ह्रां सर्वज्ञतालहृदयाय नम ॥
ॐ ह्रीं ह्रूं कुब्जिकायै कलदीपायै ह्रीं ह्र किलि नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं
ह्रौं ह्रौं ह्रूं वर्वरायै ह्रूं अनादिबोधशिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रैं ङ
ञनमे अघोरामुखि छ्रां छ्रीं पायै ह्रैं स्वतन्त्रकवचाय हुं ॥ ॐ ह्रौं
ह्रौं ह्रौं महन्तारिकायै ह्रौं अनुग्र किलि नित्यताय वषट् ॥ ॐ ह्रः
किलि २ विच्चे कालिकायै ह्रः अनन्तशक्त्यै अस्त्राय फट् ॥ अथ

न्यास ॥ जलपात्र स्थापनम् ॥ ॐ जलपात्र हृष्टानि कायेवाद्दुकाँ
॥ ॐ तर्प्पनसंपूजा ॥ आवाहन ॥ धेनुमुद्रा ॥ ॐ ह्लं सं ॐ सिद्धि
नाथाय विघ्नहर ॐ क्लिं कायधी मङ्गलनामा कृत्तवोदयाम् ॥
म नमः ॐ नाथलादि सर्व्वदेवप्राकृतं ॥ अर्घपात्र स्थाप्य ॥ ॐ
ह्लूँ क्लीं स्लूँ क्लीं ह्लूँ क्लीं म्लूँ क्लीं न्लूँ क्लीं अनन्तनमः ॐ तर्पनसंपूजा ॥ ॐ ह्लं ३२ ह्लं
ॐ अर्घपात्र हृष्टानि काययाद्दुकाँ ॥ दयाचि ॥ योनिमुद्रा ॥ ॐ ह्लूं स्लूं स्लूं

ब्लूँ न्लूँ यनमाम् ॐ अर्घपात्रायनम ॥ मनमः कृणलाश्चिनसिवयन
॥ ॐ विलपनयाद्दुकाँ ॥ क्लीं वीरकुम्भ याद्दुकाँ ॥ ह्रौं सर्व्वे ॐ नमा हनीया
द्दुकाँ ॥ क्लूँ त्रिगल ॐ कृतयाद्दुकाँ ॥ ॐ ह्लं ३२ ह्लं ॐ श्रीनवात्मानन्द
नाथसन याददेवमूर्त्ययनम ॥ क्लीं सौं याद्दुकाँ ॥ विन्दुत्रय ॥ अलिनां ॥
मित्रलिङ्ग ॥ आवाहन ॥ यासा पना यावा ॐ कि खगस्थास्वसंपू
चिनी । सांम्सूर्य्यपनाकाङ्क्षा आयाहि क्लूं हमगुरुनं ॥ मण्डलमध्ये:

त्वा नम ॥ मलमर्दन ॥ मूसास्त्राय नम ॥ मयूनास्त्राय नम ॥ नमा स्त्रा
य नम ॥ ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः ॥ ॐ ग्लौं श्री क्रू लग स्वस्थानाय स्व व ह्न ह्ला मासा स
हिताय पादुं ॥ ॐ श्रौं क्रीं क्रूं लयूत वटुकनाथाय स्व व ह्ला मासा सहिताय
पादुं ॥ ॐ क्रौं क्लीं क्रूं क्रः वयालाय स्व व ह्ला सहिताय पादुं ॥ स्वस्व मं
त्र नवलि ॥ आवाहन ॥ गउ ॥ दत्तु ॥ तर्जनी मुद्रा ॥ नवात्मान्यासयाय
॥ ॐ अं अंगुलकाय हृदु ॥ करन्यासं ॥ ॐ हंसं कनिष्ठकाय हंसं

॥ क्षं मं अनामिकाय क्षं मं ॥ ॐ लं वं मध्यमाय लं वं ॥ ॐ नं यं तर्ज
न्याय नं यं ॥ ॐ उं अंगुष्ठाय उं ॥ अं अंगुलकाय अं ॥ कनिष्ठकादिक
रन्यास ॥ ॐ हंसं पश्चिमवक्त्राय हंसं ॥ क्षं मं उत्तरवक्त्राय क्षं मं
॥ लं वं दक्षिनवक्त्राय लं वं ॥ नं यं पूर्ववक्त्राय नं यं ॥ उं उर्द्ध वक्त्र
य उं ॥ अं उर्द्धपवक्त्राय उं ॥ पश्चिमादि वक्त्र न्यास ॥ ॐ हंसं घ्राण
पाय हंसं ॥ ॐ क्षं मं शिरसे क्षं मं ॥ ॐ लं वं शिखाय लं वं ॥ नं यं कव

वाय वेयं ॥ ॐ, नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ, अं नलकाय फट् ॥ हृदयादि ६ अ
ङ्गन्यास ॥ ॐ ह्रं ह्सौः श्रीनवात्मानन्दनाथ स्वसमयाचाराय मूर्त्तये न
मः ॥ आत्मसंपूजा ॥ ततो आसनपूजा ॥ ॐ आदिनाथ स्वात्मने नमः ॥ ॐ क्रीं
हें नवनाथ स्वात्मने नमः ॥ ॐ श्रीसामनाथ स्वात्मने नमः ॥ ॐ क्रों आमर्द्दक
नाथ स्वात्मने नमः ॥ ॐ क्रीं महाकालीश्वरनाथ स्वात्मने नमः ॥ ॐ क्रुं ॐ महा
थ स्वात्मने नमः ॥ ततो पूजनं ॥ ॐ ग्लौं ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः ६ गणपतिनाथः

यक्षवल्लहासहिताय पां पू ॥ ॐ क्रीं श्रीकुब्जिकाबटुकनाथय यक्षवल्ल
हासहिताय पां पू ॥ मण्डल दक्षिणे ॥ ॐ ह्रं ह्सौः ॐ श्रीनवात्मानन्द
नाथ समयाचार गुरुपादुकां पूजयामि ॥ मध्ये ॥ ततो अष्टदलपूजनं
प्रयागक्षेत्रे ॐ २८ मं अनलहें नवाय ब्रह्मायनीय नाम्या पां पू ॥ ॐ वरुण
महाक्षेत्रे कं ॐ वर्द्धकहें नवाय माहेश्वरीय नाम्या पां पू ॥ ॐ कोलापुर
क्षेत्रे वं ॐ आगहें नवाय कौमारीय नाम्या पां पू ॥ ॐ अट्टहास क्षेत्रे टं

ॐ हनसिद्धि हेनवाय वेक्रूवी [illegible]म्बा पादुकां ॥ ॐ ऊर्ध्व[illegible]म्बात्मने ॐ रुद्र
हेनवाय वाराहीय मा म्बा पांपू ॥ ॐ वनिपक्रोत यँ ॐ किलि रहेनवा
य जल्वायनीय मा म्बा पांपू ॥ ॐ एका वकक्रोत यँ ॐ का[illegible]नाप हेनवा
य वामूर्त्ति य मा म्बा पांपू ॥ ॐ दवीकाटक्रोत गँ ॐ ही मनहेनवाय म
हाल[illegible]य मा म्बा पांपू ॥ ॐ पूर्वादि ब्लीं गान्क नौं ॥ पूनम ध्य सं पूज्य ॥
ॐ सँ ह[illegible]सीसानन्दनाथ पांपू ॥ ॐ हँ नकलिसानन्दनाथ पांपू ॥ ॐ कं स

वर्क्ष[illegible]नन्दनाथ पांपू ॥ ॐ मँ महाकालानन्दनाथ पांपू ॥ ॐ लँ यीनाक्ष
नन्दनाथ पांपू ॥ ॐ वँ खङ्गीसानन्दनाथ पांपू ॥ ॐ नँ कुङ्गीसानन्द
थ पांपू ॥ ॐ यँ वालीसानन्दनाथ पांपू ॥ ॐ उँ ऊर्घिसानन्दनाथ पांपू
॥ ॐ स ल्प्रीनवात्मानन्दनाथ समयाध्यवाय पांपू ॥ ऊ[illegible]नमस्क्रनपि:
आ ॥ मात ॥ हृदयादि ॥ वक्ष्न संपूज्य ॥ नानाजाति ॥ न[illegible]ग ॥ ग[illegible]पस्थान
पूप ॥ जम्माधि ॥ कानसर्व ग[illegible]निकल्पन ॥ यक[illegible]कपि ॥ नव ॥

पातल ॥ कुसुविंगति ॥ दिग्वक्षनन्नाथ ॥ सिद्धानां ॐ पू ॥ आवाहनं
ढि ॥ तर्प्पन ॥ उपचारं दत्वा ॥ श्रीनवात्मानन्दनाथ २ समयाङ्कचतु
तुर्मूर्ल्यर्वद्धन ग्रहानं स्वाहा ॥ बलिप्रदानं ॥ गन ॥ वटुक ॥ क्षेत्र ॥ योगि
न्यानि ॥ ॐ त्यादि वलि ॥ जाप ॥ जाप ॥ तर्प्पन ॥ नमस्कार ॥ ॐ त्रिपुर
मण्डलपूजाविधि ॥ ० ॥ नमामण्डपीअर्च्चनं ॥ ऐं मण्डपीठस्थायै ऐं ॥
ॐ आसनं ॥ ऐं मण्डपदेवता ऐं ॥ क्लीं मण्डपदेवता क्लीं ॥ सौं मण्डपदेवता सौं ॥

ह्रूं मण्डपदेवता ह्रूं ॥ ह्सौं मण्डपदेवता ह्सौं ॥ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं
ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ४ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं
फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं ४ कुलवागीश्वरी पीठं ॥ ऐं क्लीं सौं ह्रूं
ह्सौं ह्स्फ्रें ह्स्फ्रों नमो भगवति ह्रूं कुब्जिकायै ह्रां ह्रीं ह्रूं ङञणनमे
अघोरमुखी छ्रां छ्रीं किणि २ विच्चे नमो भगवति ह्सौं ह्स्फ्रें
श्रीं ऐं ... ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्सौं श्रीनवा



स्मानन्दनाथपादुकां ॥ मूलमन्त्र ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें ह्सौं सिद्धिनाथाय विद्महे ह्री
कुब्जिकाय धीमहे । तन्नो मातृ प्रचोदयात ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ॐ
श्रीनत्मो वो नन्दनाथ समयाद्या पादुकां ॥
हृदयादि ॥ षडङ्गन संपूज्य ॥ मूलनवलि ॥ जुह्वा ॥
मुद्रा ॥ जाप ॥ भात ॥ पंचासहस्रं नूपस्थायाम लव गायक कुलं
कुलमकारं, प्रत्यङ्गन नमाम्यहं ॥ धूपगंधादि ॥ इति समयपूजा ॥

वर्न ॥ ॰ ॥ ततो कर्म्ममण्डलपूजनं ॥ पुनर्मूलं ... ॥ ज
लपात्र ॥ विसर्ज्यार्घपात्रपूजा ॥ गणपूजनं ॥ ग्लं गणपतये ग्लं ॥
दक्षिने ॥ क्षौं क्षेत्रपालाय क्षौं ॥ वाम ॥ ह्रीं वटुकाय ह्रीं ॥ लं ब्रनक
यलं ॥ श्री दक्षवामन्तु च्छनाय श्री ॥ हूं योगिनीभ्यो हूं ॥ पुन ॥
वाम ॥ दक्षिणे ॥ ॐ क्रौं निसाचरनाय क्रौं ॥ ॐ क्रौं नमापूहाय क्रौं ॥ ॐ
क्रौं कालगलाय क्रौं ॥ इति ग्रवनपूजा ॥ ततो आसन ॥ ॐ पंचवदन

पिण्ड ध्यानम ॥ ॐ वँ चन्द्रमण्डलाय वँ ॥ ॐ नँ सूर्य्यमण्डलाय नँ
॥ ॐ कँ वह्निमण्डलाय कँ ॥ क्षौं स्वाहा वह्निपात्रासनाय क्षौं ॥ ३०
॥ आह्न ॥ ध्यान ॥ त्रियंजलि ॥ ॐ ९ ९ ३ २ ९ ९ ३ ॥ ॐ नमस्त्रिन त्रि
धासंपूज्य ॥ लयाङ्ग ॥ शीगमन्त्र ॥ पूजयन्तु ॥ आवाह्य ॥ मूद्रा ॥ य
ज्ञौन पूजनं ॥ वँ ब्रह्मपात्रासनाय वँ ॥ ल्मूँ आदियानयी० आगन्ध
नीयपत्रा ह्रूँ ॥ क्रूँ आलंध नयी ब्लूँ० आगन्धनीयपत्राम्वा
म्लूँ ॥ म्लूँ पूर्णगीतीयी० पूर्णगन्धनीयपत्राम्वा म्लूँ ॥ म्लूँ कामरूप
यी० कामगन्धनीयपत्राम्वा म्लूँ ॥ य ब्लूँ हि म्लूँ मकान ॥
४ ॥ ॐ विँ विष्णुपात्रासनाय विँ ॥ ग्लूँ ग्लूँ कँथनाथ ग गनाम्वा ग्लूँ ॥
स्लूँ आनन्दनाथस्वर्गाम्वा स्लूँ ॥ ह्लूँ शंकरानन्दनाथमर्त्याम्वा ह्लूँ ॥
म्लूँ पिंगलानन्दनाथपातालाम्वा म्लूँ ॥ न्लूँ सानन्दानाथनागम्वा
न्लूँ ॥ वायुव्याकान ॥ ॐ ॥ रूँ रुद्रपात्रासनाय रूँ ॥ श्मूँ आनन्द

डाकिनीयम्बाम्बा ग्म्र्यूँ ॥ ग्म्र्यूँ ज्वल्या डाकिनीयम्बाम्बा ग्म्र्यूँ ॥ ल्म्र्यूँ य
क्षानन्दलाकिनी म्बा ल्म्र्यूँ ॥ क्म्र्यूँ श्रीगमनन्दकाकिनी म्बा
क्म्र्यूँ ॥ म्म्र्यूँ ज्वालानन्दसाकिनी म्बा म्म्र्यूँ ॥ क्ष्म्र्यूँ पादानन्दकि
नीम्बा क्ष्म्र्यूँ ॥ ईशानकोन ॥ ६ ॥ ऌं श्वयथा:
स्वाय ऌं ॥ लँ ज्ञानीशानन्दकाम्बा लँ ॥ वँ कुक्षीसानन्द
वन्दोम्बा वँ ॥ गँ ज्ञानगीशानन्दकरालाम्बा गँ ॥ यँ ज्ञदन्विग्ना

नन्दमहाकुष्माम्बा यँ ॥ पूर्वकोन ॥ ४ ॥ सँ सदाशिवयथास्वाय
सँ ॥ गँ ज्ञानादिविमलाम्बा गँ ॥ सँ सर्व्वज्ञविमलाम्बा सँ ॥ यँ योगवि
मलाम्बा यँ ॥ मँ सिद्धविमलाम्बा मँ ॥ नँ समयविमलाम्बा नँ ॥ आग्नि
कोन ॥ ७ ॥ निं द्वयनाथाय निं ॥ ल्म्र्यूँ मित्रिसानन्दकुद्धिकाम्बा
ल्म्र्यूँ ॥ भ्म्र्यूँ ओड्डानन्दलक्ष्मीम्बा भ्म्र्यूँ ॥ ब्म्र्यूँ षष्ठानन्दकुडाम्बा
ह्म्ल्व्र्यूँ ॥ ह्म्ल्व्र्यूँ चर्यानन्दकुब्धिकाम्बा ह्म्ल्व्र्यूँ ॥ नै

मूलस्थान ॥ ४ ॥ कुलिजूलादिसत्तिकर्म्म पश्चिमादिने स्व
स्थाने मूलस्थानपूजाविधि ॥ ५ ॥ असिताङ्गहे नवब्रह्मायनीये
पू ॥ रुरुहे नव माहेश्वरीयायै पू ॥ चण्डहे नव कौमारीयायै पू ॥ क्रो
धहे नव वैष्णवीयायै पू ॥ उन्मत्तहे नव वाराहीयायै पू ॥ कपालिस
हे नव इन्द्रायनीयायै पू ॥ भीषणहे नव चामुण्डायायै पू ॥ संहारहे न
व महालक्ष्मीयायै पू ॥ पश्चिमादिने स्थाने ॥ मूलमन्त्र संपूज्य ॥

[illegible] ॥ मूलमन्त्रेन त्रिधा संपूज्य ॥ हृदयादि ॥ मूलादर्श
न ॥ मूलेन बलि ॥ कुलिकर्म्म पूजाविधि ॥ ७ ॥ मूलमूलस्थान
न ॥ बलि ॥ संपूज्य ॥ आधारशक्त्यादि ॥ ८ ॥ वं चन्द्रमण्डलाय वं ॥
रं सूर्य्यमण्डलाय रं ॥ कं वह्निमण्डलाय कं ॥ ह्रीं स्वाहा वह्निप्रज्वा
लाय ह्रीं ॥ ध्यान ॥ ॐ नीलं नक्रं सुपीतं हरितमतिसितं पूर्व्वदक्षि
णसौम्य । उर्द्ध्वैर्वक्त्रमनन्तत्रिनयनसूर्य्यवक्त्रवृन्दं सहार्द्धं । वन्दे

हस्तं त्रिशूलनत्रासिविन दिवे श्वाऊदत्तु प्रसानं, खड्गा ॐ यादिजानं,
ऊपनलिपि थना, ह्रीं तिदच्चस्यवर्ल्लं । विज्ञानार्द्ध दीप्यमानविनलिव
दना मक्रमाद नजानं. वामे ॐ विद्धि नास्तुय नितक्रिनतं वाह
क्रन्तर्खं ॥ स्दिद्वाप्राउनाकं मनिरुनिकनक खड्गंकद्दांपस्त्रमं, नील
र्णं मुण्डमाला धरमतितनूं श्रीनवसं नमामि ॥ ध्यान ॥ खड्गकाताअ
नाहानसमूल कमलादिप्य र्द्धत्तुखाञ्ज, मूलं चक्र कं वर्णं निसनवि

नमा४

लस कर्ल्ह कांय ऊहस्त । जाद्धं हकरव ला मकनरनस हिता पूस
कादत्त कांर्य ऊ ज्ञानवपत्तु त्रिशूला, लिङ्गनालं खड्ग
डि. ॥ ह्रूं मिश्वान ॥ १७९३२९७३ ॥ अनमत्तनविधार्त्यपूजा ॥ हृदय
दि ॥ गन संपूजा ॥ आवाहन ॥ मुद्रा ॥ मूलनवलि ॥ त्रिखण्डयुज
नं ॥ प्रतास्त्रायनम ॥ ॐ नमो भगवते रुद्रायनम ॥ नेमघ्यकासमा
हनं ॥ सर्वकामार्थसाधकानां ॥ कुञ्जवामनीनां ॥ प्रनीहतीनां ॥ स्व

…यपव…प.यविवर्त्तिनीनां ॥ सर्व्वसत्ववशाकर्षणी छादनान्मूलन ॥
कर्म्म सक्षयनिवर्त्तिनीनां ॥ सर्व्वमातृगुह्यायनम सिद्धि ॥ यन कर्म्म स्कं
दन ॥ …र्नमा…नांविवनगुरु…यायु ॥ मूडखण्ड ॥ …ब्रह्मायनी
…माधववनद विश्व ॥ ॐ ध्यादि मूलमातृका ॥ मातृखण्ड ॥ ॐनमश्चाम
…उन्द कौली प्रकलित सिखविष्णु विष्णुनाबनाद्धि ॥ पिंगलकृत ॥ वि
…दृष्ट कूर्द्ध ॥ मांससा…नसनासूनप्रिय ॥ हस२ हूय२ विकट२ म…

…

या…लाकू…यपसद्गुणया…वर्त्तिनीनां ॥ नूक२ कूर२ हिनि२ छिन्द२ द्वि
न्दः विद्रावय२ ग्रासनि२ भ्रामनि२ द्रावनि२ क्षोभनि२ मावनि२ संजी
वनी२ हनि२ गनि२ धूनि२ घूविलीरनमानम ४ ॐविर्द्व स्वाहा ॥ १८
१३२७ ॥ श्रीनवात्मानन्दनाथसम यावक्ष्या त्रिखण्डान्ते नवीवि
र्द्धायुं ॥ ॐ त्रित्रिखण्डा विधि ॥ तथायून ४ मूलदेवी त्रिखण्डामर्त्तन
संपूज्य ॥ अड्गं ॥ वाक्यवन्दनादि ॥ मूद्रा ॥ थानि ॥ त्रिलिरवा ॥ प…

कपालिनी ॥ ललिता ॥ दर्शयन्त ॥ वलिप्रदानं ॥ सर्व्वविघ्नकमनयसु
मन्त्र वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ गणपेतिनाथाय वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रः
ज्वालामु[illegible]लिनि वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ ॐ वटुकनाथाय वलि गृह्न २ स्वा-
हा ॥ [illegible]योगिनिभ्यो वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ क्षक्षेत्रपालाय वलि गृ-
ह्न २ स्वाहा ॥ जुमुकदेव, जुमकदेवी, जुमुकदेवी गदिनाय वलि गृ-
ह्न २ स्वाहा ॥ सर्व्वसाक्षि कृह्न २ हूं हूं वलि गृह्न २ स्वाहा ॥ त्वाकंम.

हा वलि न्हूनके ॥ धूप ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ जाय ॥ ह्रूं ९ सः ९ स्वाहा १०८ ॥
क्षमा ॥ सवलि ॥ शक्ति पूजा ॥ सन्तान पूजा ॥ पश्चिमयाजुका ॥ पूजाग-
[illegible]दि ॥ तर्प्पन ॥ एकान्तक ॥ जुम्बयूर्व ॥ वलिविसर्ज्जनमन्त्र ॥
॥ वलिविसर्ज्जन ॥ वलिवाः
[illegible] ॥ [illegible]न पूजा ॥ देवनमस्कार ॥ ॐ शिष्टी पश्चिमवालदेवार्च्चन वि-
धि समाप्त ॥ ७ ॥ ॐ नमः कालिकायै ॥ नाथि[illegible]

प ॐ गूं नमस्कृत्य ॐ हूं इष्टदेवता स्मरनन यथा शक्ति जपित्वा बहिर्ग
त्य स्नात ॥ ततः ४ प्रातः क्रियां विधाय, दन्तधावनादिकं विधाय
। मूलेना… ऽथ प्रकाल्याद्भि नाचम्य, शिवसिन्धु ह्रीं स्तुं युगं विश्चि कनमः
स्नानम् ॥ यथा गुरुसानति मिलान्यस्य स्यादि ॥ ततो हृत्पद्मे न स्वामानर्चू
र्याध्वर्वी ध्यात्वा, मानसायवाने ४ संपूज्य ॥ यथा शक्ति जपित्वा, बहिर्ग
त्य तु ॥ ततो मध्नं संप्राप्य कूलवृत्तिकामादाय, नद्यादौ गत्वामलापंक

र्ली, स्नात्वा मूलमन्त्रेन, त्रिः स्नात्वा मूलेनाचम्य मूलमूत्वार्घ्यं ॐ मूकी
देवी तर्पयामि नमः ४ ॥ ॐ शिवगुरुस्त्वा नाभिकायां गेनति ४ संतर्प्य
तु ॥ ततः स्वात्मा पूजास्थानमागत्य, मूलेन जलमामन्त्र्य ततः जल
नेमूल… वाये पादौ प्रक्षाल्य मूलेनाचम्य सूर्यार्घं दत्वा ॥ यथा
चन्दनं रक्तपुष्प, दूर्वा, कुशा, दिकं ताम्रपात्रे दत्वा नमामं
… सवायुयवकं गशक्ति सहिताय ॐ दमर्घं सूर्याय नमः ॥ ततः

४ कञ्चनवर्णाम्बुजमध्यात्, सर्वजयविग्रह, कमलासनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं
सर्वयन्त्रमध्ये ॥ पृथ्व्यादिकं मूलनाडिमध्ये, नैर्ऋत्यां वायुपत्रकासनाय न
म ॥ ॐ ह्रीं पृथ्व्यै, पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता त्वञ्च
धारय मां नित्यं पवित्रमासनं कुरु, ॐ ह्रीं पृथिव्याधिष्ठित्यै नमः ॥ स्ववाम
गुरुभ्यो नमः ॥ परमगुरुभ्यो नमः ॥ परापरगुरुभ्यो नमः ॥ परमेष्ठि
गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ मध्ये ॥ अमुकदेव्यै नमः ॥

ॐ ति नमः फट्, इति भूतशुद्धिं कुर्यात् ॥ तद्यथा, नाभौ नाभिमितं वह्निबीजं
रक्तवर्णं ध्यात्वा तज्जातवह्निना पापदेहं दग्ध्वा विचिन्त्य यं इति बीजं धू
म्रवर्णं हृदि ध्यात्वा तज्जातवायुना तद्भस्म वहिः सार्य ॥ ललाट
लमिति चन्द्रबीजं शुक्लवर्णं विचिन्त्य ॥ तद्गलितामृतेन ज्ञानेन भाविता
कृत्वा, गतीनमूल्याग्र, आत्मानं परमात्मनि ततः स्वकं विकल्प
तु ॥ ॐ ह्रीं भूतशुद्धिं ॥ ततः प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा मूलविद्यया च

ऊर्ध्वांगेजपेत् ॥ वामनासाग्रवायुमापूर्य ॥ नाभिचक्रोत्तनवांगेज
पेत् कुम्भकेन नाभिवायुवांगेजपेत् ॥ दक्षिणवायुरेचन ॥
एवं द्विनाडी ॥ दक्षिणनासाग्रपूरणं ॥ एवं रुद्रवामीयं ॥ पूनर्वामेन
ग्रापूरन ॥ ॐ शिवालायामद्यैकला ॥ मन्त्रिदिन्यासं कुर्यात ॥
शिरसि हृदये वेसमस्तयनम ॥ मुखविवानक्षुन्दसनम ॥ हृदि दक्षि
णकालिकायै देव्यैनम ॥ गुह्ये क्रीं बीजायनम ॥ पादयो हूं शक्ति

येनम ॥ अथ मातृकान्यास ॥ अं नम ॥ शिरसि ॥ आं नम ॥ मुख
इं नम ॥ दक्षिणचक्षु ॥ ईं नम ॥ वामचक्षु ॥ उं नम ॥ वामकर्णु ॥ ऊं
नम ॥ दक्षिणकर्णु ॥ ऋं नम ॥ दक्षिणनासापूट ॥ ॠं नम ॥ वाम
नासापूटे ॥ लृं नम ॥ दक्षिणगण्डु ॥ ॡं नम ॥ वामगण्डु ॥ एं नम ॥
ओष्ठ ॥ ऐं नम ॥ अधर ॥ ओं नम ॥ ऊर्ध्वदन्तपङ्क्ती ॥ औं नम ॥ अधो
दन्तपङ्क्ती ॥ अं नम ॥ शिरसि ॥ अः नम ॥ मुख ॥ दक्षिणस्कंधे मू

लि कँ नम ४ नदग्रस ल्मो खँ नम ॥ नदग्र घँ नम ॥ नदग्र ङँ नम ॥ वाम
हस्त मूल चँ नम ॥ नदग्रस ल्मो छँ नम ॥ नदग्र जँ नम ॥ नदग्र झँ
नम ॥ नदग्र ञँ नम ॥ दक्षिनपादमूल टँ नम ॥ नदग्रस ल्मो ठँ न
म ॥ नदग्र डँ २ ॥ नदग्र ढँ २ ॥ नदग्र णँ २ ॥ वामपादमूल तँ २ ॥
नदग्रस ल्मो थँ २ ॥ नदग्र दँ २ ॥ नदग्र धँ २ ॥ नदग्र नँ २ ॥ दक्षि
नपार्श्व पँ २ ॥ वामपार्श्व फँ २ ॥ पृष्ठ बँ नाभौ हँ २ ॥ उदर मँ २ ॥ ह

दियँ २ ॥ दक्षिणस्कन्ध रँ २ ॥ ककुदि लँ २ ॥ वाम स्कन्ध वँ २ ॥ दक्षि
णहस्त मूल शँ २ ॥ वामहस्त मूल षँ २ ॥ दक्षिनपाद मूल सँ २ ॥ वा
मपादमूल हँ २ ॥ हृदि लँ २ ॥ मुख क्षँ २ ॥ अथ अंगन्यास ॥ क्रां हृद
याय नम ॥ क्रीं शिरसे नम ॥ क्रूं शिखायै नम ॥ क्रैं कवचाय नम ॥ क्रौं
नेत्रत्रयाय नम ॥ क्रः ४ अस्त्राय नम ॥ करतलकरपृष्ठया ॥ नम ४ करन्य
स ॥ क्रां हृदयाय नम ॥ अंगुष्ठया ॥ क्रीं शिरसे २ ॥ तर्जनी ॥ क्रूं शि

स्वाहा ॥ मध्यमया ॥ ॐ कवचाय हुं ॥ अनामिकाया ॥ ॐ नेत्रत्रया
य वौ ॥ कनिष्ठया ॥ ॐ ४ अस्त्राय नमः ॥ करतलपृष्ठया ॥ अथ व
र्णन्यासः ॥ ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं नमः ॥ इति हृदये स्पृ-शेत् ॥ तं
थं दं धं नं पं फं बं भं नमः ॥ इति दक्षिणोरुघटके ॥ मं यं रं लं वं शं षं सं
हं क्षं नमः ॥ इति वामोरुघटके ॥ ततो मूलमन्त्रेण त्रिव्यापकन्यासं कु
र्यात् ॥ ततः ४ स्ववामे त्रिकोणवर्त्तुलचतुरस्रमण्डलं कृत्वा ॥ ततः ४ साधा

रमर्घपात्रं संस्थाप्य मूलमन्त्रेणजलमापूर्य ॥ तदुपरि गन्धाक्षत दूर्वा
पुष्पादीन् संस्थाप्य अंकुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य धेनुमुद्रयामृ
तीकृत्य तदग्रे मूलमन्त्रं जपेत् ॥ तथा मयादि तथा आचम
नीय पाद्यस्नानं स्थाप्य जलेन पूर्य तत्किञ्चिदर्घजलं दद्यात्
॥ तत अर्घजलेन पूजापात्रं वस्त्वाद्युक्षणं ॥ ततो गन्धपुष्पधूपमान
सं ४ पञ्चोपचारेण संपूज्य बहि ४ पूजामारभेत् ॥ यथा तद्यथा

कुननां, पालिका, ताम्रपात्र, यन्त्रमालिख्य, पूजन ८ संस्थाप्य, गन्धप
त्रियीं पूजनन ॥ यथा ऽस्मंगलनायनम ॥ सनियीभयनम ॥ कल्यः
दुमायनम ॥ मूलनस्था, दवस्था, विनाक्षी, नास्थिस्थानम ॥ मध्ये ॥ सर्व
स्थायनम ॥ मूलनमूर्ति सकलकनकन्तु यिकायां, मध्ये ॥ ध्यानं
कुर्यात् ॥ यथा कपालवदनाद्यानां, मूकककंसीककुर्जां । कालिकां
दक्षिणां दिव्यां, मुण्डमालाविभूषिता ॥ सद्यश्छिन्नशिर ८ खड्ग, वामा

धोधकवाम्बुजां । अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्द्ध्वपानिकां ॥ महामेघ
प्रभां श्यामां, तथा चैव दिगम्बरा ॥ कण्ठावसक्तमुण्डाली, गलद्रुधिर
चर्चिता ॥ कर्णावतंसतानीत, शवयुग्मभयानकां । घोरदंष्ट्राक
रालास्या, पीनोन्नतपयोधरां । शवानां करसंघातैः ८ कृतकाञ्ची
हसन्मुखी । सृक्कद्वयगलद्रक्त, धाराविस्फुरिताननां । घोररावां
महारौद्री, श्मशानालयवासिनीं । सर्वनूपमहादेव, हृदयां निस

क्षिणां । शिवाशिवानवयारि, चतुर्दिक्ष समन्वितां । महाकालन
नसम, मूर्य विद्रावनारतां । स्मितानन सवाचूहां, ॐ नित्या त्वाद
दयार्द्धवी । सहस्र दलकमल, पनम जिव, सद्रव्य वहन्नासा पूर
न विकल्लां पूज्या लोनिवस्य, यन्त्रस्थ ययत । नानो लगवतिद
क्षिण कालिके ॐ हृदयवदे २ ॐ हति स्व २ ॐ हसं निये स्मि २ ॐ हुस नि
नूपवद्वस्व २ तिस्र यामुद्रया ततिथाययवषट् ग नसंकल्ला अवतुं तेन

मुद्रया कवचाय हुं ॐ यवं गु धनुर्मुद्रया अमृतीकरणम्
मुद्रया अस्त्राय ॥ जीवन्यासक्रियातु ॥ यथा, ॐ क्रौं क्रौं हंस ४ अमूकद
द्याः प्राणा ॐ हंसः प्राणा अमुकदेव्याः जीव ॐ हं स्थित, अमुकदेव्याः ४ स
र्वेन्द्रियाणि अमुकदेव्या वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राणा ॐ हंगगत्य
सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ततः ४ पाद्यादिना पूजनं ॥ यथा मूलम
न्त्रोर्यं दक्षिणकालिकायै नमः पाद्यं नमः ॥ एवमर्घ्य पंचकं आचमनी

यँ अर्घपूजना चमनीय ॥ गन्ध पुष्प, धूप, दीप, नैवद्यादि न
दलकलान, पुष्पाञ्जलित्रयँ दद्यात् ॥ ततामूलमूत्वर्य, दक्षि
णकालिकायै नवबलिनम ॥ ततनकुलादिनावलिदद्यात् ॥ ततः
नानमस्कारञ्जावनुत यउजत् ॥ ततानि कव्यायेनम ॥ अहि मेकाले
कालीयेनम ॥ कनोयेनम ॥ कुलायेनम ॥ कुलकुलायेनम ॥ विरु
पिन्यैनम ॥ विप्रचित्तायेनम ॥ तता२ यत्र त्रिकाले उग्रायेनम ॥
उग्रप्रभायेनम ॥ दीप्तायेनम ॥ य नश्रिकाले ॥ नीलायेनम ॥ घनायेनम
बलाकायेनम ॥ धूप त्रिकाले ॥ मात्रायेनम ॥ मुद्रायेनम ॥ मितायेन
म ॥ तता अष्टदलपूजादिक्रमन ॥ ब्राह्मी २४ ॥ नारायणी २४ ॥ माहेश्व
र्यै २४ ॥ चामुण्डायै २ ॥ कामार्थ्यै २४ ॥ अपराजितायै २४ ॥ वाराह्यै २४ ॥
नारसिंह्यै २४ ॥ ततामूलमूत्वर्य ॥ दक्षिनकालिकायै तनैवद्यँन

म ॥ ततो गुरून् त्वा, मनसा ध्यात्वा च देवीं ॥ जप्त्वा कुल गणं जपन् ॥ त
तो गुरुश्चादि गुरुश्च परमेष्ठि मित्यादि नाथ गुरुत्रं वन्दे जयफलं देव्या दक्षि
ण हस्ते समर्पयत् ॥ ततो ऽष्टाङ्ग प्रणम्य स्तुत्वा आवाहनं न जानामि
नैव जानामि पूजनं मि निद्य विसर्जनं, क्षमस्व परमेश्वरि विसर्ज्य ॥ स वि:
नाथ समूह साध्वीं स्वहृदि विसर्जयेत् ॥ ततो ऽत्र सान्यादि निर्माल्यं
त्वा, निर्माल्यं च वन्दे स्वयं नमः ४ ॥ ॐ निर्माल्यवासिनी पूजयेत् ॥

निर्माल्यं स्व शिरसि, निधाय, यथा सर्वं विदितयत् ॥ ॐ नि पूजा यन्तल
३ समाप्त ४ ॥ ॥ ईश्वर उवाच ॥ कालिकाया महाविद्या, काले मास
नेइ स्तरा ॥ तत्र पिहृदयं ध्येय, मन्त्रिश्च विरूपाक्षन् ॥ कवचं तु म
हादेवी, कथयस्वानुकम्पया ॥ यदि ता कथ्य मया न, धिर्मश्च मि
तदा तत् ॥ देव्युवाच ॥ शृणु मजा यन्तवस्त, तव स्नेह कामयतः
नवकवचं नद्यकवचं, मन्त्रिगुह्य नमहत् ॥ कालिकां जयन्ती माता ८ म

कइ४ खविनामिनी । विलोचन ३ कलियुगे, महापापिकदालिनी ॥
कालिमधूनयातु, वृहन्नघकपालिनी । कलासदक्षिणेयातु, कनू
कल्लनवे ॥ विशामितीमिनपातु, क्षिपविलेतुय ३ । उग्रमना
सिकापातु, कर्णेत्रीयागवखामता ॥ वदनेपातुभद्रिका, नीनाव
चिवूकं सदा । घनाधीर्वं सदापातु, वलाकावाक्रयुग्मकं ॥ अ
पराजितावयाहो, वामांवपातुवांगुलि । सर्वस्कन्दसिंही, पय

दवमावतु ॥ वक्राहींतुयस्थान, वर्जितंकावयनतु । गलर्वेन्द्र
भवि, कालिकांथानदक्षिणे ॥ ऊर्द्ध मध्यस्तथादिक्षु
। मायापातुकंनहन्द, वक्रामुडासदापातु ॥ सिमापातुस्क
नद्वन्द, यानिमन्तुलदवता । ब्राह्मीमजनेपातु, नाहीनांवायनी
तथा ॥ उमानूहश्ववनीनियं, चामुण्डापातुलिङ्गक । कौमारीच
कटिपातु, तथैवऊंधयुग्मकं ॥ अपराजितावयाधो वामीव

पातुवाङ्कुलि । सन्धिष्ठानेनोव सिंदी, पत स्था ददताकतु ॥ नैक्षादी
नेतुयम्लार्न, व ह्रींमंकवचनतु । तत्सर्वनिरुभदवि, कालिका घा
नदक्षिणे ॥ उर्द्धमधनथादिक्षु, पातुदवी स्वयंवपु । हिंस्त्रभ्यः
सर्वदा पातु, साधकञ्छजलादिकान् ॥ दक्षिणाकालिका देवी,
व्यापक त्व सदावतु ॥ ॐ कवचमज्ञात्वा, योजपत् घोरदक्षिणां
। नपूजा फलनमा माति, विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥ कवचं न ता
निर्यं सकयऐव गच्छति । कवचतंजयस्तस्य, नक्षा स्यादिय तद्व दि
त ॥ ॐ इति कवचं समाप्त ४॥ ॥
श्री गणायनमः ॥ वन्दे मुकुन्दस्य पदारविन्द ॥ ॥
विक्ष गगनस्थदि स्व रुद्रवर्णा ध्यात्वा, मानसे ४ पञ्चभिः परं ५ संपूज्य
यथाशक्तिवा ऊ पूजां कृत्वा जपं समर्पण त्वा सर्वं कुर्यात् ॥ ॥
मूलकस लिहृदि स्वरूपवर्णा ध्यात्वा यथाशक्ति जपित्वा नत्वा यथा भूरवं

छिद्रयत् ॥ ॥ अथ काम्यद्रव्य ॥ कृष्णपक्षचतुर्दश्यां भगवेवानव
निशायूजा कमनसंपूज्य नकवन्त्नन कायूष्य अपराजिता व
र्द्धनादि हि ४ पूजयत् ॥ एवं मत्स्यमांसमद्यमध्यमैथुनादि हि ४ य
अ३ ४ कालनसंपूज्य नाशी पूजयनधिकफलं ॥ ॥
अस्मन्नयधन श्री३ ऐं ह्रीं सौ क्रीं वे अहि२ अस्मनअस्म नाक्रव अस्म नव
नूपिलि अस्मगं आवयर२ अस्मगंद्रावयर२ अस्मकं कुरु२ वासं यकर२

मा अं भूपर२ ह्रीं ह्रीं हूं ऐं क्रीं हं ४ निवायक्रूं सां हं स्वाहास ४ ८ स्वाहा ॥

[illegible] [illegible]

॥ लुकु सायविमावनाय २ ॐ दक्षिण पक्षिं कनु२ क्रीं क्रीं
कूं ऊँ क्रीं क४ क्रीं ह्रीं ह्रं ४००० स्वाहा ॥ ॐ सिद्धचसाधनं ॥

क्रीं३ हूं२ क्रीं२ दक्षिणकालिके क्रीं३ हूं२ क्रीं२ स्वाहा ॥ क्रीं
हूं ह्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा ॥ ॥ स्वाहा कालिकादक्षिण क्रीं२ हूं

२क्रीं३ ॐ श्मशानक्रीं२ हूं२क्रीं३ स्वाहा दक्षिणकालिका स्वाहा क्रीं२
हूं२ क्रीं३ ॥ विलासमनउपचाकर्षन ॥

नगोलपूजा ॥ जम्काय रू गासां ॥
डल जस्तु पातउ कशुद्धि जाल पूजा ॥ श्रा
थल नेकल्याद्रि ॥ मूं लाहा ॥ ये नमथ ध्याना ॥
लछेल स्वादनयादि ॥ लस उनतियांगलि ॥

ध्वज॥ बलि॥ आवाहन पूजा॥ धूप दीप जप॥ स्तो
त्र॥ आदि॥ बलि॥ ॥ गणेश पूजा॥ उन्न
स्कान्त॥ न्यास॥ ॐ दुं सुखाय ह ०॥ आदि कल
न्यास॥ जल पात्र [illegible] पात्र [illegible] दिव्यास पूजा॥
आवाहन॥ जिद्द [illegible] नादि नमः॥ दक्षा॥ ॐ

ये महाकाल [illegible] नमः [illegible] नमः [illegible] लक्ष्मी नम
॥ ॐ देव [illegible] नमः [illegible] स्थान त्र [illegible] आदि पूजा
॥ त्रिपा॥ लि॥ ऊतम [illegible]॥ ध्वज॥ बलि॥ आवाह
॥ [illegible] पूजा॥ धूप दीप जप॥ स्तोत्र [illegible] दा
यादि॥ स्तोत्र॥ आदि॥ बलि॥ [illegible] पा॥ [illegible] पूजा

कोनवत्ना॥ वं कृष्णायदद्दाकनकछं न्यासा।
नवकृपं पूजाउकमुद्रिश्रात्मपूजा॥ आसनाम्
आसनायश्र॥ ध्यना॥ वांमहस्तेनवज्रांकुश. आति
नं दक्षिणेनच॥ चक्रनं चन्द्रमानु दे. दक्षिणेन
त्रिशूलचं॰ ॐ वं ध्यना [illegible] वं पंडा
सुपा॥ इति ध्यनपूजकमस्त्रा॥ ॐ क्रांजां ॐ श्री
नेवक्रूमहाकैरूयाद्धे॥ ध्यनूयानिपूजा॥ धूप
दीपहायस्त्रोजा॥ वायनमस्तुत्रिया॥ क्रोंजंहूं
मन्त्र महाकाल॥ ध्यनयो॥ थवरम[illegible]नर्जियां

स्मि॥ बलि॥ श्रावाक्षसूत्ता॥ सूर्य पूजा॥ महा
वाहो स्वाया॥ हृदयनन्दन गुणकू नदेआनं तो
वेलायनमकुर्गी॥ भूतां अद्दि॥ वाक नसह
॥ॐ हिनवंमा॥ ॥

